ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-6* July - 2017
Innovation The Research Concept

बुलन्दशहर जनपद में नियुक्त उच्च प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षणपद्धति का अध्ययन

उदय पाल सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
नेहरु पी0 जी0 कॉलेज,
छिबरामऊ, कन्नौज

सारांश

इस युग में निःसन्देह शिक्षा संस्था में शिक्षक की आधारभूत भूमिका है। अध्यापक को निश्चित व्यक्तिगत व सामाजिक भूमिका का निर्वाह करना होता है, ताकि छात्रा अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकें। इसका अर्थ यह है कि अध्यापक को न केवल शिक्षण के तत्वों व पद्धति में योग्य होना चाहिए वरन् उसे व्यवसाय के लिए आवश्यक मूल्यों, आदर्शों का भी ज्ञान होना चाहिए। प्रभावशाली शिक्षक होने के नाते एक अध्यापक को नियमित रूप से अपने ज्ञान में वृद्धि तथा व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि करते रहना होगा।

इस शोधपत्र में अध्ययन का क्षेत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश का जिला बुलन्दशहर की उच्च प्राथमिक पाठशालाओं में कार्यरत् शिक्षकों को लेकर किया गया है। उत्तरदाता बेसिक शिक्षा परिषद् उ0प्र0 के स्थायी कर्मचारी हैं।

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों के आधार पर प्रदत्तों का संलन किया गया। प्राथमिक स्त्रोत साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से संकलित किये गये। द्वितीयक स्त्राोत विद्यालय पंजीकाएं, गजट व जनरल शैक्षिक रिपोर्टस आदि के माध्यम से एकत्र किये गये हैं। विद्यार्थियों को प्रेरणा देना शिक्षक होने का मुख्य उद्देश्य की ओर संकेत करता पाया गया, जबकि शिक्षकों के एक चौथाई भाग ने ज्ञान के प्रसार को शिक्षक होने का मुख्य उद्देश्य स्वीकार किया। शिक्षण व्यवसाय में अपनी स्थिति से पूर्णतया संतुष्टि प्रकट करता हुआ पाया गया, इनमें उन शिक्षकों का बाहुल्य था, जिनकी नियुक्तियाँ इनके अपने घरों के अति निकट हो गई थीं या करा ली गई। ऐसे शिक्षक विद्यालय जाने के साथ–साथ किसी भी अन्य व्यवसाय को अपनी आय में वृद्धि करने के लिए अपनाए हुए थे अथवा अपने पैतृक व्यवसाय को स्थिर रखे हुए थे। इनको शिक्षक एक अतिरिक्त व्यवसाय व आय का अन्य साधन–सा लगता हुआ पाया गया।

राष्ट्रीय ढाँचे के अंतर्गत शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन किया गया है, इसके अनुसार वह सूचना देने वाला न होकर ज्ञान व चिंतन को बढ़ावा देने वाला होगा। अध्यापक व छात्र के बीच संवाद पर आधारित अध्यापन की उसमें सिफारिश की है। यह कहा गया है कि अध्ययन–अध्यापन में विभिन्न तरीके अपनाए जाएं। शैक्षणिक यात्राएँ, नाटक, सामूहिक वाद–विवाद, समस्याओं का निदान व विचार–विमर्श आदि किए जाएं। यह सर्वमान्य तथ्य है कि कोई भी शिक्षा व्यवस्था वृहत्तर रूप में उसके लिए उपलब्ध शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। प्रत्येक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक एक धमनी केन्द्र है। वास्तव में शिक्षण व्यवसाय में आर्थिक संतुष्टि एवं सामाजिक प्रस्थिति और प्रतिबद्धता तीनों का सह–अस्तित्व नहीं है। वरन् यह एक विशिष्ट प्रकार का व्यवसाय है, जिसके अन्तर्गत कोई व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन को एक ऐसे रचनात्मक कार्य के लिए समर्पित करता है, जिसके लिए समाज कठिनता से आर्थिक प्रतिफल चुकाता है।

अध्ययन को ध्यान में रखकर ही वर्तमान शिक्षा में शिक्षक की भूमिका चुनौतीपूर्ण हो गयी है। शिक्षक उच्च प्राथमिक शिक्षा में ही एक छात्र को उसकी मजबूत नींव के द्वारा भविष्य की चुनौती के लिए पूर्ण रूप से तैयार रखना चाहता है, इसीलिए उच्च प्राथमिक शिक्षा को अलग–अलग विद्वानों के द्वारा अपनी कुछ पंक्तियाँ प्रदान की गयी है, जिससे बालक का पूर्ण विकास हो सके।

मुख्य शब्द : उच्च प्राथमिक, शिक्षणपद्धति का अध्ययन, शिक्षक

प्रस्तावना

मानव जीवन में जीवन का आधारभूत स्तम्भ है। मनुष्य की विचारों, व्यवहार तथा दृष्टिकोण के जनवादीकरण व मानवीकरण में शिक्षा एक महत्वपूर्ण

अभिकर्त्ता के रूप में उपस्थित होती है। यह मनुष्य के बंधनों से मुक्त कराती हुई आज के लोकतांत्रिक युग में उसके लिए एक सुदृढ़ आधार भी प्रस्तुत करती है। साथ ही जन्म तथा अन्य कारणों के फलस्वरूप जातीय एवं वर्गगत विषमताओं से भी उसे ऊपर उठाती है।

''शिक्षा की चुनौती'' नामक एक सरकारी दस्तावेज (1975) के अनुसार उच्च प्राथमिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि पहले आठ वर्षों की स्कूली शिक्षा, जो प्रारम्भिक शिक्षा कहलाती है, सबसे महत्वपूर्ण होती है। वह छात्रों को व्यक्तिगत, मनोवृत्ति, सामाजिक विश्वास, आदतों, अध्ययन कौशल और सम्प्रेषण योग्यताओं की नींव रखने का काम करती है। यदि कोई बच्चा इस अवस्था में अच्छी शिक्षा प्राप्त कर लेता हैं तो यह जीवन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखता, क्योंकि उसे कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। लेकिन अहम मुद्दा यह है कि दस्तावेज जारी करने के वर्षों बाद इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक ढाँचा भी नहीं जुटा पाए हैं या सिर्फ कागजी काम ही हुआ है।

सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण के इस दौर में शिक्षण एक व्यवसाय का दर्जा पाने के लिए प्रयत्न तेज कर रहा है। व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता, जो उसका एक महत्वपूर्ण अवयव है, का अध्ययन अनेकों पृष्ठभूमियों में किया जाना चाहिये। व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध होना इसकी एक शर्त है, जिसके अभाव में कोई भी कार्मिक एक उच्च प्राथमिक शिक्षक अपने को व्यवसायी नहीं कह सकता, और न ही वह अपने व्यवसाय को एक व्यावसायिक दर्जा दिला सकेगा। आज के इस युग में जिसमें धन को प्राथमिकता देते हुए ही कोई कार्य किया जा रहा है और उस व्यवसाय का सम्मान उससे अर्जित धन के आधार पर ही किया जाने लगा है, शिक्षक विशेषकर उच्च प्राथमिक शिक्षा इस होड़ में पीछे रहते हुए पाए जाते हैं, तो एक आश्चर्य की बात होगी। अर्थात् एक कार्मिक केवल वेतनभोगी ही रह जाता है, और उसे व्यवसाय के प्रति कोई लगाव और उसकी पवित्रता व अस्मिता के प्रति कोई सम्मान की भावना नहीं रह जाती है तो किस प्रकार एक व्यवसायी कहा जा सकता है।

शिक्षण एक व्यवसाय है। यह एक प्रकार की जनसेवा है, जिसमें विशेष ज्ञान व दक्षता की आवश्यकता होती है। उसमें छात्रों की शिक्षा और कल्याण के लिए निजी एवं सम्मिलित उत्तरदायित्व की भावना की अपेक्षा होती है। (एन0सी0आर0टी0 1987)

फ्रोबेल के अनुसार शिक्षण की प्रक्रिया विकास की प्रक्रिया है। जिस प्रकार एक माली अपने पौधे का पोषण करता है, विकास करता है, उसी मार्ग का अनुसरण अध्यापक को करना चाहिए। अध्यापक का काम केवल निरीक्षण करना है, विकास तो स्वाभाविक गति से होता रहेगा। बालक की प्राकृतिक क्रिया को जानकर उसे उत्तेजित करना ही शिक्षक का काम है। हाँ, उसे बालक के स्वाभाविक विकास का समुचित ज्ञान अवश्य होना चाहिए। इसके लिए शिक्षक को आत्म–निरीक्षण एवं बाल–क्रियाओं का निरीक्षण विधिपूर्वक करना चाहिए। बालक निरन्तर विकासशील है, नवीन क्रियाएँ क्रमिक विकास का अनुसरण करती हुई स्वयं प्रस्फुटित होती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में हम कुछ मुद्दे उत्तरदाताओं के समक्ष रख रहे हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. उच्च प्राथमिक शिक्षकों की कार्य की वर्तमान दशाओं का ज्ञान प्राप्त करना।
2. उच्च प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता का ज्ञान प्राप्त करना।
3. उच्च प्राथमिक शिक्षकों की भूमिका विशिष्टताओं का पता लगाना।

अध्ययन का क्षेत्र

इस शोध पत्र में अध्ययन का क्षेत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश का जिला बुलन्दशहर की उच्च प्राथमिक पाठशालाओं में कार्यरत् शिक्षकों को लेकर किया गया है। उत्तरदाता बेसिक शिक्षा परिषद् उ0प्र0 के स्थायी कर्मचारी हैं। अध्ययन विषय को विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ एवं गहनतम रूप प्रदान करने के लिए जिले में कार्यरत् कुछ शिक्षकों में से 100 उच्च प्राथमिक शिक्षकों ''पुरुष एवं महिला'' प्रत्येक श्रेणी से लिए गए हैं। उत्तरदाताओं का अध्ययन निदर्शन पद्धति के द्वारा चुनाव किया गया है।

तथ्य संकलन की प्रविधि

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों के आधार पर प्रदत्तों का संलन किया गया। प्राथमिक स्त्रोात साक्षात्कार–अनुसूची के माध्यम से संकलित किये गये। द्वितीयक स्त्रोत विद्यालय पंजीकाएं, गजट व जनरल शैक्षिक रिपोर्ट्स आदि के माध्यम से एकत्र किये गये हैं।

तथ्य संग्रह एवं विश्लेषण

वर्तमान अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अपनी सार्वभौमिकता का दावा नहीं करते वरन् सीमित परिप्रेक्ष्य में उच्च प्राथमिक शिक्षकों के वर्तमान स्वरूप की ओर संकेत करते हैं।

उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों के आधार विश्लेषण के लिए जो सारणीयन किया गया है वह निम्न प्रकार है–

सारणी संख्या 1

शिक्षक बनने के विभिन्न उद्देश्यों के आधर पर वर्गीकरण

कथन शिक्षक बनने के मुख्य उद्देश्य क्या थे?	शिक्षक बनने के मुख्य उद्देश्य			
	विद्यार्थियों को प्रेरणा देना	ज्ञान के प्रसार के लिए	समाज की सेवा	योग
संख्या	39	26	35	100
प्रतिशत	39	26	35	100

सारणी–1 के आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि उत्तरदाताओं का 39 प्रतिशत विद्यार्थियों को प्रेरणा देना शिक्षक होने का मुख्य उद्देश्य की ओर संकेत करता पाया गया, जबकि शिक्षकों के एक चौथाई भाग ने ज्ञान के प्रसार को शिक्षक होने का मुख्य उद्देश्य स्वीकार किया। समाज की सेवा के लिए 35 प्रतिशत ने स्वीकार किया, किंतु गहन पूछताछ के उपरान्त यह तथ्य उजागर हुआ कि उत्तरदाताओं मे अधिकांश ने रोजी रोटी के लिए ही शिक्षण को स्वीकार किया था।

सारणी संख्या 2

कथन आप व्यवसाय में अपनी स्थिति से संतुष्ट हैं।	प्रतिक्रियाएँ			योग
	पूर्णतया	अशांति	नहीं	
संख्या	64	24	12	100
प्रतिशत	64	24	12	100

सारणी 2 के आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि उत्तरदाताओं का एक भाग (64) इस व्यवसाय में अपनी स्थिति से पूर्णतया संतुष्टि प्रकट करता हुआ पाया गया, इनमें उन शिक्षकों का बाहुल्य था, जिनकी नियुक्तियाँ इनके अपने घरों के अति निकट हो गई थीं या करा ली गई। ऐसे शिक्षक विद्यालय जाने के साथ–साथ किसी भी अन्य व्यवसाय को अपनी आय में वृद्धि करने के लिए अपनाए हुए थे अथवा अपने पैतृक व्यवसाय को स्थिर रखे हुए थे। इनको शिक्षक एक अतिरिक्त व्यवसाय व आय का अन्य साधन–सा लगता हुआ पाया गया। ऐसे शिक्षकों से व्यवसाय के हित में कोई कदम उठाए जाते हों, ऐसी आशा होती नहीं लगी। 24 प्रतिशत उत्तरदाता अपने–अपने निराशावादी दृष्टिकोण को प्रकट करते हुए इंगित किया कि इस व्यवसाय में आंशिक संतुष्टि प्राप्त किए हुए थे, इसका कारण उनकी अपनी मानसिक स्थिति इस व्यवसाय का वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति असंतुष्टि प्रकट करती थी। केवल 12 प्रतिशत उत्तरदाता व्यवसाय में अपनी स्थिति से पूर्णतया असंतुष्टि प्रकट कर रहे थे। अवलोकन के मध्य पाया गया कि ये शिक्षक महत्वाकांक्षी थे, और साथ ही जागरूक भी, जो व्यवसाय से तथा समाज से अपने उच्च स्तर के व्यावसायिक प्रदर्शन के प्रतिफल के रूप में कुछ अध्कि चाहते थे। चाहे वह सामाजिक, सम्मान, व्यावसायिक सुरक्षा आर्थिक प्रतिफल व प्रोन्नति में से कोई एक ही या उससे अधिक हो।

मुद्रित पृष्ठ की शक्ति मनुष्य के मन पर प्राचीन काल से प्रभाव डालती आ रही है। शैक्षिक उपलब्धियाँ, अनुभव, व्यवसाय की पसंदगी आदि ऐसे प्रत्यक्ष एवं निर्णायक तथ्य हैं, जो एक व्यवसाय का सदस्य होने के नाते शिक्षक की साज–सज्जा के द्योतक हैं। इसमें और अध्कि योगदान करते हुए कुछ पार्श्व सूचनाएँ जैसे स्वाध्याय, ज्ञान के अन्य क्षेत्रों की पसंदगी, कुंजी पुस्तक संग्रह, अभिरूचियाँ आदि इस बात की ओर संकेत करती है कि शिक्षक अपनी योग्यताओं की वृद्धि और रूचियों का विकास एक शिक्षक के नाते करता है। इसमें रूचि रखने का अर्थ उसकी सामाजिक और व्यावसायिक प्रतिबद्धता की ओर संकेत करता है। शिक्षकों के खाली समय में स्वाध्याय संबधी तथ्य निम्न सारणियों में प्रदर्शित किए गए है।

सारणी संख्या 3

कथन आपके पास स्वाध्याय के लिए समय है।	उत्तरदाता			
	पर्याप्त	अपर्याप्त	नहीं	योग
संख्या	08	12	80	100
प्रतिशत	08	12	80	100

सारणी संख्या 4

कथन आपका अपना निजी पुस्तक संग्रह है।	उत्तरदाता			
	पर्याप्त	अपर्याप्त	नहीं	योग
संख्या	—	06	94	100
प्रतिशत	—	06	94	100

सारणी 4 प्रदर्शित करती है कि शिक्षकों के बहुत बड़े भाग ;94 प्रतिशत को पुस्तक संग्रह और स्वाध्याय जैसे मामलों से कोई सरोकार रखना उनके लिए कोई ऐसा विषय नहीं है, जिसे वह अपने व्यवसाय से जुड़ा मानते हों। शेष 6 प्रतिशत भी जिनके पास अपना अपर्याप्त पुस्तक संग्रह है, उसे वे धर्म या दर्शन से जोड़ने की बात करते थे। विद्यालय के उपरान्त वे अपने खाली समय का उपयोग अपने किसी अन्य व्यवसाय व कृषि आदि के लिए सुरक्षित रखते पाए गए। इस तरह शिक्षा और शिक्षण से इसका कोई सरोकार स्वीकार नहीं करते।

सारणी संख्या 5

कथन आपकी राय में शिक्षक सम्मान का द्योतक है।	उत्तरदाता			
	उच्च वेतन	सामाजिक सम्मान	श्रेष्ठ प्रदर्शन	योग
संख्या	84	14	2	100
प्रतिशत	84	14	2	100

सारणी 5 के आंकड़े यह प्रदर्शित करते हैं कि उत्तरदाता का बड़ा भाग (84 प्रतिशत) उच्च वेतन को ही शिक्षक सम्मान का द्योतक स्वीकार करता पाया गया। आज के आर्थिक तंगी के युग में व्यक्ति और कहीं की बात सोचने की मनोदशा में ही नहीं। क्यों आज सबकी राय में धन, प्रभुता, शक्ति और वैभव को प्रदर्शित करने का सबसे अच्छा और सुगम साधन के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है। उत्तरदाता का एक लघु भाग इससे असहमति प्रकट करते हुए अपने व्यवसाय में श्रेष्ठ प्रदर्शन की बात करते पाया गया, किन्तु उसके मन में कहीं न कहीं आर्थिक अभाव के भय की छाया स्पष्ट दिखाई देती थी। उत्तरदाता का एक भाग (14 प्रतिशत) सामाजिक सम्मान की बात तो कहता पाया गया मगर वह भी अन्त में आर्थिक मुद्दे पर आकर अपनी बात से विमुख हो जाता था।

निष्कर्ष

आधुनिकीकरण की तीव्र गति से उच्च प्राथमिक शिक्षकों की वर्तमान प्रशासनिक स्थिति में कार्य करने की पद्धति तथा उनकी व्यवसायिक प्रतिबद्धता अछूती नहीं रही।

भूमिका संरचना के आधुनिकीकरण के अर्न्तगत न केवल व्यवहार में आन वाले परिर्वतन समाविष्ट होते हैं वरन् साथ ही मनुष्य के मानसिक गुण भी इससे प्रभावित होते है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्तियों के प्रेरणादाय मूल्य एवं प्रतिमानों में भी भारी परिवर्तन आते है।

सामान्य कथन में एक शिक्षक का मनोबल उसके उस धैर्य या साधन को कहा जा सकता है, जो शिक्षण

व्यवसाय के प्रति उसकी रूचि व उमंग, व्यक्ति की उपलब्धि तथा सामूहिक ध्येय को वर्तमान परिस्थितियों में प्रदर्शित करता है। इसमें यह जोड़ते हुए कि मनोबल एक भाव प्रेरित शब्द है, जो मनुष्य की भिन्नता को प्रकट करने की अवधारणा है। यह एक जटिल और संकुच अवधारणा है, जो एक से अधिक आवश्यक अंगों से युक्त है एवं इसको प्रत्येक अंग इसके द्वारा भाषित प्रतिक्रिया के संबंध में श्रेष्ठतम् परिभाषित किया जा सकता है।

अन्त में शिक्षक की दो भूमिकाएँ हो जाती है– सेवा की भूमिका और रचनात्मक भूमिका। दूसरी भूमिका अपेक्षा करती है कि शिक्षण कार्य व्यावसायिक दृष्टि से निपुण व्यक्तियों का कार्य है। अतः यह महत्व की बात है कि प्रत्येक शिक्षक अपना सामाजिक दर्शन स्वयं विकसित करे और उसका आचरण व्यवसाय द्वारा निर्धारित आचार–संहिता से निर्देशित हो। निःसन्देह व्यावसायिक दर्शन और आचार संहिता से शिक्षक को अपने कार्य के प्रति सैद्धान्तिक अंतदृष्टि विकसित करने में सहायता मिलेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अहमद, क्यू. (2008) डटर मेशन ऑफ जॉब इनवोलमेन्ट अमोन्ग टीचर पी–एच.डी0 थीसिस, मगध यूनिवर्सिटी, मनोविज्ञान*
2. *कार्सन ई.टी. ए.एल (2014) फोर कमिटमेन्ट प्रोफाइल्स एण्ड देयर रिलेशनशिप टू इमपॉवरमेन्ट सर्विस रिकवरी एण्ड वर्क एटीट्यूड्स पब्लिक पर्सनल मैनेजमेन्ट वोल्यूम 98 (1)– 1–13*
3. *सिंह, वाई0 (2000) सोशल स्टारटिफिकेशन एंड चेन्ज इन इंडिया मनोहर दिल्ली*
4. *जोर्ज0 टी0एम0 (2001) लिविंग कन्डीशन्स ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स, एम0एड0 थीसिस, केरल विश्वविद्यालय*
5. *उभरते भारतीय समाज में अध्यापक और शिक्षा (1992) एन0सी0ई0आर0टी0 प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन संख्या 13061*
6. *प्राइमरी शिक्षक (2013) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली*